स्वातंत्र्याचा अमृत महोत्सव

सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ
(पूर्वीचे पुणे विद्यापीठ)

राष्ट्रीय सेवा योजना
गणेशखिंड, पुणे – ४११ ००७

प्रा.डॉ. गणेश भामे
एम्.ए., पीएच्.डी.
संचालक (अतिरिक्त कार्यभार)

कार्यालय क्र. : ०२०-२५६२२६८८/८९
: ०२०-२५६२२६९०/९१
: ०२०-२५६२२६९२
: ०२०-२५६९७३४१

संदर्भ : रासेयो/२०२६—२७/११५ दि. २९/०६/२०२६

प्रति,
मा.प्राचार्य/संचालक,
रासेयो संलग्नित सर्व महाविद्यालये परिसंस्था,
पुणे, अहिल्यानगर व नाशिक जिल्हा,
सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ.

विषय : इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (IGNCA) आयोजित प्रकाशित ७ व्या नदी उत्सवामध्ये सहभागाबाबत...

संदर्भ : १.मा.अध्यक्ष, जनपद सम्पदा विभाग, नवी दिल्ली यांचे File No.:JS/13/104/2024-25, Date: 11th June, 2026 रोजीचे पत्र
२.मा.कुलगुरू यांचे कार्यालयामार्फत संदर्भ क्र.१ पत्र आवक क्र.व्हीसी ३४८९,दि.२३ जून २०२६ रोजी अग्रेषित

महोदय,

उपरोक्त विषय आणि संदर्भीय पत्रान्वये भारत सरकारच्या सांस्कृतिक मंत्रालयांतर्गत कार्यरत असलेल्या इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र(IGNCA) हे कला क्षेत्रातील अध्ययन, दस्तऐवजीकरण, प्रकाशन आणि ज्ञान प्रसारासाठी कार्य करणारे एक प्रमुख संशोधन व संसाधन केंद्र आहे. नदी उत्सव हा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र(IGNCA) अंतर्गत आयोजित केला जाणारा वार्षिक प्रमुख उपक्रम आहे. देशातील नद्या आणि नदी संस्कृतीविषयी चर्चा, संवाद आणि विचारांची देवाणघेवाण करण्यासाठी हा उत्सव एक महत्त्वपूर्ण व्यासपीठ उपलब्ध करून देतो. या उत्सवामध्ये परिसंवाद, माहितीपट चित्रपट महोत्सव, विषयाधारित प्रदर्शने तसेच भारतातील जलसृष्टीशी संबंधित विविध संकल्पनांवर आधारित सांस्कृतिक सादरीकरणे यांचा समावेश असतो.

यावर्षीचा ७वा नदी उत्सव दि. २४ ते २५ सप्टेंबर २०२६ या कालावधीमध्ये आयोजित करण्यात आला आहे. त्याचा केंद्रबिंदू यमुना नदी आहे. सदर नदी उत्सवामध्ये विविध उपक्रमांचा समावेश करण्यात आला आहे. त्यानुसार आपल्या महाविद्यालयामधील रासेयो स्वयंसेवकांना या उपक्रमांमध्ये सहभागी होण्याबाबत सूचित करावे. सदर उपक्रमाबाबतचे संकल्पनापत्र(Concept Note), उपविषय आणि सहभागी होण्याकरिताची नोंदणी लिंक सोबतच्या पत्रामध्ये नमुद केलेली आहे. तसेच इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र(IGNCA) च्या संकेतस्थळावरही उपलब्ध आहे.

तसेच याबाबतची माहिती BOD लॉगीनमध्ये NSS - Gov Other Reports - Add New - योजना/उपक्रम निवडा यामध्ये उपक्रमाचे नाव "नदी उत्सव 2026" या विषयाची निवड करून सादर करण्यात यावा. अहवाल सादर करताना 'संक्षिप्त अहवाल/अभिप्राय/टिपणी/प्रतिक्रीया' याठिकाणी सदर उपक्रमाकरिता सहभागी विद्यार्थ्यांची माहिती घ्यावी. सदर उपक्रमाचे सविस्तर पत्र आपल्या माहिती व उचित कार्यवाहीकरिता सोबत जोडले आहे. कळावे, ही विनंती.

संचालक (अतिरिक्त कार्यभार)
राष्ट्रीय सेवा योजना

सोबत : मा.अध्यक्ष, जनपद सम्पदा विभाग, नवी दिल्ली यांचे पत्र

सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ, पुणे-७.
आवक/जावक क्र.: 162
दिनांक: 23 JUN 2026
राष्ट्रीय सेवा योजना
शाखा-

प्रो. के. अनिल कुमार
अध्यक्ष
जनपद सम्पदा विभाग
Prof. K. Anil Kumar
HoD
Janapada Sampada Division

आज़ादी का अमृत महोत्सव

PSD
NSS
Antaye 24

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
जनपद सम्पदा
INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS
Janpada Sampada
Janpath Building, Janpath (Near Western Court),
New Delhi-110 001
Website : www.ignca.gov.in

File No.: JS/13/104/2024-25
Date: 11th June, 2026

Subject: Regarding Participation in the 7th Nadi Utsav at IGNCA

Respected Sir,

Greetings!

The Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA), an autonomous trust under the Ministry of Culture, Government of India, is a premier research and resource centre, engaged in the study, documentation, publication and dissemination of knowledge in the field of arts.

The Nadi Utsav is an annual flagship programme under the IGNCA's Riverine Culture project. It serves as a platform for discussions, dialogues, and the exchange of ideas regarding the country's rivers and riverine culture. The festival comprises a seminar, documentary film festival, thematic exhibitions, cultural expressions based on various themes related to the waterscapes of India.

This year's festival, from 24th – 26th September, 2026, focuses on the Yamuna River, brings together scholars, environmentalists, policymakers and field workers to deliberate on the river's ecological crises, cultural history and pathways towards its rejuvenation. The festival features three national-level key components:

i. Seminar: The Eternal Yamuna: Chronicles of Conflict, Biotic Healing and the Socio-Cultural Hearth.
ii. Documentary film festival: The River as an Archivist (Films on all rivers are welcome, with a special slot dedicated to films on Yamuna, pertaining to the year's theme).
iii. Photograph Exhibition: Seeking Yamuna.

In this regard, it is requested that this invitation may kindly be circulated among your students, scholars, and faculty members to actively participate in the seventh Nadi Utsav under the afore-said components. We believe their insights and perspectives will greatly enrich the deliberations. The concept-notes along with the sub-themes and registration links are enclosed herewith and also available on our website (https://ignca.gov.in/events/7th-nadi-utsav/). For any further information and enquiry, please contact Sh. Abhay Mishra, Convenor, Nadi Utsav (Mob. 98717 65552, Email: nadiutsavignca@gmail.com)

We look forward to a strong participation from your university.

Encls: as above

Warm regards,

10/11/26
(K. Anil Kumar)

कुलगुरू यांचे कार्यालय
सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ
आवक दिनांक 22 JUN 2026
आवक क्रमांक पीसी 3489
जावक दिनांक 22 JUN 2026

Dr. Suresh Gosavi
Vice Chancellor,
Savitribai Phule Pune University
Ganeshkhind, Pune, Maharashtra – 411007
Email: puvc@unipune.ac.in

Seventh Nadi Utsav seminar concept note

The Eternal Yamuna: Chronicles of Conflict, Biotic Healing, and the Socio-Cultural Hearth

When the waters of the Yamuna rose in 2023 and reached the Red Fort, some said she had reclaimed an older path. The Yamuna, it is believed, was eager to touch baby Krishna's feet even as Vasudev struggled to cross her surging vastness. The Yamuna, it is also said, was dragged over the landscape by a stubborn Balarama. Rivers are now defined by this contradiction - they shape civilisations, they are duly worshipped: but they are also harnessed and polluted. As we celebrate the abundance that rivers enable, we must take cognisance of the brutality in our relationship to rivers. The Yamuna is the site for Krishna Leela in Jayadeva's *Gita Govinda*. The same river has witnessed the battles of Kurukshetra and Panipat. And the Yamuna has also borne the concrete weight of the transformation of the capital city region over decades. Now that the flooding of the river has become an annual feature, we must pause and ask - how can we as scholars, students, custodians, environmentalists, and beneficiaries of the Yamuna ensure that the river thrives in environmental and cultural terms?

At the seventh Nadi Utsav, the Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA), an autonomous trust under the Ministry of Culture, Government of India, in collaboration with the Department of English, University of Delhi, is organising a seminar dedicated to articulating the significance of the Yamuna across academic disciplines. The national seminar, titled 'The Eternal Yamuna: Chronicles of Conflict, Biotic Healing, and the Socio-Cultural Hearth' aims to revisit and expand the existing perceptions of the river. The seminar intends to understand the Yamuna through an interdisciplinary perspective - as river, as metaphor, as deity, as an entity with whims and needs, as a pivot of culture and memory, and as a water body in urgent need of restoration and preservation.

We invite abstracts (250 words) that address any of the following sub themes pertaining to the Yamuna.

1. The River of Chronicles: Civilisational Memory and the Domestic Sphere
2. A Living Link: Oral Traditions, Artisanal Legacies, and Livelihoods
3. The Sacred Stream: Rites of Passage, Ritual Arts, and Cultural Identity
4. Contested Flows: Strategic Conflict, Urbanisation and its Pressures, and the Battles for Space
5. Ethics, Biotics, and the Environment in the Assessment and Conservation of the Yamuna

सातवाँ नदी उत्सव संगोष्ठी अवधारणा

शाश्वत यमुना: संघर्ष के आख्यान, जैविक उपचार और सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन-अंगीठी

जब 2023 में यमुना का जलस्तर बढ़ा और वह लाल क़िले को छूने लगी, तो कुछ लोगों ने कहा कि नदी ने पुराना रास्ता वापस ले लिया है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार जब वसुदेव नवजात कृष्ण को सर पे लिये यमुना की उफनती विशालता को पार करने का संघर्ष कर रहे थे, तब दरअसल यमुना कृष्ण के चरणों को स्पर्श करने के लिये व्याकुल थी। यह मान्यता भी है कि एकदा हठ पर अड़े बलराम ने यमुना को जबरन खींचकर उसका मार्ग बदल दिया था। आज के दौर में नदियाँ इसी विरोधाभास से परिभाषित हैं—वे सभ्यताओं को आकार देती हैं, वे विधिवत पूजित हैं; लेकिन साथ ही उन्हें बांधा भी जाता है, प्रदूषित भी किया जाता है। जब हम उस विपुलता का उत्सव मनाते हैं जो नदियाँ हमें देती हैं, तो हमें नदियों के साथ अपने क्रूर होते व्यवहार को भी संज्ञान में लेना होगा।

यमुना जयदेव के 'गीत गोविन्द' में कृष्ण लीला की स्थली है। यही नदी कुरुक्षेत्र और पानीपत के युद्धों की साक्षी है, और इसी यमुना ने दशकों से राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के कंक्रीट में बदलते रूप के भार को भी सहा है। वर्तमान समय में जब नदी में बाढ़ आना एक वार्षिक घटना बन गयी है, तो हमें सोचना होगा कि हम—अध्येता, छात्र, संरक्षक, पर्यावरणविद् और यमुना के हितभागी के रूप में यह कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं कि यह नदी पर्यावरणीय और सांस्कृतिक, दोनों रूपों में समृद्ध हो?

सातवें नदी उत्सव के अवसर पर, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (आईजीएनसीए)—जो भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अधीन एक स्वायत्त न्यास है, दिल्ली विश्वविद्यालय के अंग्रेज़ी विभाग के सहयोग से एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन कर रहा है, जो विभिन्न शैक्षणिक विषयों के माध्यम से यमुना के महत्त्व को रेखांकित करने पर केन्द्रित है। 'शाश्वत यमुना: संघर्ष के आख्यान, जैविक उपचार और सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन-अंगीठी'— इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्देश्य यमुना नदी के प्रति मौजूदा दृष्टिकोण की समीक्षा करना और उसका विस्तार करना है। संगोष्ठी का उद्देश्य यमुना को एक अन्तर्विषयक परिप्रेक्ष्य से समझना है—एक नदी, एक रूपक, एक देवी, एक ऐसी इकाई के रूप में जिसकी अपनी इच्छायें और ज़रूरतें हैं, संस्कृति और स्मृति के एक केन्द्र के रूप में, और एक ऐसे जलस्रोत के रूप में जिसे अविलम्ब जीर्णोद्धार और संरक्षण की आवश्यकता है।

हम यमुना से सम्बन्धित निम्नलिखित उप-विषयों पर शोध-सार (Abstracts - 250 शब्द) आमंत्रित करते हैं।

शोध-सार भेजने की अन्तिम तिथि 19 जून 2026 है।

1. गाथाओं की नदी: सभ्यता की स्मृति और घरेलू क्षेत्र
2. एक जीवन्त कड़ी: मौखिक परंपराएँ, शिल्प विरासत और आजीविका
3. पवित्र धारा: जीवन के संस्कार, अनुष्ठान कलाएँ और सांस्कृतिक पहचान
4. अशान्त प्रवाह: सामरिक द्वंद्व, बढ़ता शहरीकरण और ज़मीन के लिये संघर्ष
5. यमुना का पारिस्थितिकी आकलन और संरक्षण: नैतिकता, जैव-घटक और पर्यावरण

Abstract submission link/ शोध-सार भेजने की लिंक
https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSfA8DK2FR_hCEVU77flmmzsKUrGnxg1-_liD1WvcDG1H_gK3A/viewform

Seventh Nadi Utsav documentary film festival concept note

The River as an Archivist

The rivers of our subcontinent are far more than mere lines on a map; they are the living, fluid diaries of our communities. For generations, they have quietly witnessed the unfolding of our civilisation—from ancient sages composing timeless epics on their banks to modern cities rising beside them. Our connection with water is deeply personal; our folk traditions have always spoken to rivers as family, sharing human struggles and celebrating seasonal joys, rather than treating them as indifferent streams of water.

To honour this profound bond, the Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA), an autonomous trust under the Ministry of Culture, Government of India, celebrates the seventh edition of Nadi Utsav. This year, our film festival segment invites creators and storytellers to explore the theme: 'The River as an Archivist'.

We call for films that unlock the deep memories stored within our waterbodies. It is an invitation to look around your own surroundings and tell the unfiltered story of your local river, stream, or wetland. We encourage you to bring out its unique local history, its moments of joy, its current grievances, and the pressing environmental issues it faces today. Whether it is a grand narrative of community migration or a fragile, quiet story of a neighbourhood waterbody, your lens can give the water a voice.

The cinematic stories celebrating all rivers across the Indian subcontinent are most welcome and encouraged. However, a dedicated section in the festival will feature films centered on the Yamuna, as the river is this year's theme.

Nadi Utsav serves as a cultural confluence bridging ancestral roots with modern environmental consciousness. We invite filmmakers to join this cinematic confluence.

Submissions close on 14th August 2026.

Film entry formats

1. Spandan: The Pulse (reel/ short video – upto 50 seconds)
2. Dhara: The Stream (short documentary – upto 20 minutes)
3. Pravah: The Flow (full length documentary – upto 50 minutes)

सातवाँ नदी उत्सव डॉक्यूमेंट्री फ़िल्मोत्सव अवधारणा

नदी को याद है: इतिहास, समय और पुरालेख

हमारे उपमहाद्वीप की नदियाँ मानचित्र पर महज़ रेखाएँ नहीं हैं; वे हमारे समुदायों की जीती, बहती, धड़कती डायरियाँ हैं। पीढ़ियों से, वे हमारी सभ्यता, विकास व रचनाओं की गवाह रही हैं–उनके तटों पर कालजयी महाकाव्यों की रचना करने से लेकर निरन्तर विकसित होते, ऊँचे, आधुनिक शहरों तक। पानी से हमारा आत्मीय नाता है; हमारी लोक परम्पराओं में नदियाँ कोई उदासीन जलधारा नहीं, अपितु परिवार, गाँव, समाज का हिस्सा हैं जिनसे हम अपने जीवन का सुख-दुःख बाँटते हैं, जिनके तटों पर हर मौसम का उल्लास सब मिलकर मनाते हैं।

इसी आदिम और गहरे रिश्ते को उत्सव का रूप देने के लिये इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (आईजीएनसीए)–जो भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अधीन एक स्वायत्त न्यास है, नदी उत्सव का सातवाँ संस्करण मना रहा है। इस वर्ष होने वाले फ़िल्म फ़ेस्टिवल की थीम है 'नदी को याद है: इतिहास, समय और पुरालेख'।

हम फ़िल्म निर्माताओं और विज़ुअल कहानीकारों से ऐसी फ़िल्मों का आह्वान करते हैं जो हमारे जलस्रोतों में समाये समय, इतिहास के परतों की बात करें। यह अपने आस-पास की स्थानीय नदी, जलधारा या दलदली इलाक़े की बिना फ़िल्टर की कहानियाँ कहने का एक निमंत्रण है। आप अपने जुड़ाव की नदी/ जलधारा/ जलीय क्षेत्र के अनूठे स्थानीय इतिहास, उसकी ख़ुशियों के पल, उसकी वर्तमान शिकायतें, नाराज़गी, या उसके सामने मौजूद गम्भीर पर्यावरणीय मुद्दों को सामने लायें। चाहे किसी समुदाय के विस्थापन की पीड़ा हो या पड़ोस की किसी छोटी धारा की कोई शान्त, संवेदनशील कहानी–आपका लेंस पानी को एक आवाज़ दे सकता है।

भारत की सभी नदियों पर बनी फ़िल्मों का इस उत्सव में सहर्ष स्वागत है। हालाँकि, फ़िल्मोत्सव में एक विशेष खण्ड यमुना पर बनी फ़िल्मों के लिये होगा क्योंकि यमुना सातवें नदी उत्सव की थीम नदी है।

नदी उत्सव हमारी पुरखों की जड़ों को आधुनिक पर्यावरणीय चेतना से जोड़ने वाला एक सांस्कृतिक संगम है। हम सभी विज़ुअल माध्यम के कथाकारों को इस सिनेमा संगम का हिस्सा बनने के लिये आमंत्रित करते हैं। फ़िल्म प्रविष्टि भेजने की अन्तिम तिथि 14 अगस्त 2026 है।

फ़िल्म प्रविष्टि फ़ॉर्मेट

1. स्पन्दन: द पल्स (रील/ शॉर्ट वीडियो - 50 सेकंड)
2. धारा: द स्ट्रीम (शॉर्ट डॉक्यूमेंट्री - 20 मिनट)
3. प्रवाह: द फ़्लो (डॉक्यूमेंट्री - 50 मिनट)

Film entry submission link/ फ़िल्म प्रविष्टि भेजने की लिंक

https://docs.google.com/forms/d/1ZMaCnDOQ6Tf98_ropDXXyw-btGczD2v_OeswZShaMhg/edit?usp=forms_home&ouid=107943102678144158951&ths=true

Seventh Nadi Utsav photo contest concept

Seeking Yamuna

The rivers of India have a robust presence in the historical, cultural, and spiritual heritage of the country and its people. To celebrate this deep bond with the legendary waters, the Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA), an autonomous trust under the Ministry of Culture, Government of India, along with Photocommune, present an All India Photo Contest as part of the seventh Nadi Utsav, a festival celebrating our riverine legacy.

The seventh Nadi Utsav is dedicated to the resilience of the Yamuna river. The contest titled 'Seeking Yamuna', is a call to visualise the spirit of the Yamuna – the river's journey, history, mythology, legacy, ecology, environment, current situations, people/ communities connected with the river, and what the river means to you. You are welcome to share any rare or archival photo (s) of the Yamuna.

The best photos will be showcased in a curated exhibition at the seventh Nadi Utsav, at IGNCA, New Delhi.

This year, bring forth your candid connection with the Yamuna and become a part of the invocation to the river.

The last date for photo submission is 14th August 2026.

सातवाँ नदी उत्सव फ़ोटो प्रतियोगिता अवधारणा

घाट-घाट जो जमुना है

नदियों का भारत और यहाँ के लोगों के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत में बहुत अहम स्थान है। नदियों के साथ इस अपनेपन को मनाने के लिये इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (आईजीएनसीए)–जो भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अधीन एक स्वायत्त न्यास है, और फ़ोटोकम्यून मिलकर सातवें नदी उत्सव के तहत एक अखिल भारतीय फ़ोटो प्रतियोगिता आयोजित कर रहे हैं।

नदी उत्सव हमारी नदियों और नदी-विरासत की कहानी है और इसका सातवाँ अध्याय यमुना नदी की दृढ़ता और आत्मशक्ति को समर्पित है। 'घाट-घाट जो जमुना है', यह फ़ोटो प्रतियोगिता यमुना के होने को तस्वीरों के ज़रिये अभिव्यक्त करने का आमंत्रण है - इस नदी का सफ़र, इतिहास, पौराणिक महत्व, विरासत, पारिस्थितिकी, पर्यावरण, नदी के लोग/ समुदाय, मौजूदा हालात और आपके लिये यमुना नदी क्या है। आप यमुना की कोई दुर्लभ या पुरानी तस्वीर भी भेज सकते हैं।

चुनिंदा तस्वीरें सातवें नदी उत्सव, आईजीएनसीए, नई दिल्ली, में एक क्यूरेटेड प्रदर्शनी में प्रदर्शित होंगीं।

इस साल, यमुना के साथ अपने अनुभव की तस्वीर लिये नदी आहवान का हिस्सा बनें।

फ़ोटो भेजने की अन्तिम तिथि 14 अगस्त 2026 है।

Photo submission link/ फ़िल्म प्रविष्टि भेजने की लिंक
h[illegible]m/forms/u/2/d/1ARC4IBJ_jG4MXQLmIXd-
U[illegible]XGwbtBJY/edit?usp=forms_home&ouid=107943102678144158951&th
s[illegible]